gekj ;gk gMekLVj ugh gA

"हैडमास्टर", इस शब्द को सुनते ही हमारे सामने एक ऐसे व्यक्ति का चेहरा आ जाता है, जो मुख्यधारा की स्कूलों में सबसे ऊँचे पद पर विराजमान होता है। यह एक गम्भीर व्यक्ति होता है, जिससे बच्चें ही नहीं बल्कि शिक्षक भी घबराते हैं। इनका काम उच्च कक्षाओँ के बच्चों को पढ़ाना, नियम बनाना और बच्चों को ही नहीं बल्कि शिक्षकों को भी अनुशासित रखना होता है।

हर रोज "हैडमास्टर" आधे समय के बाद राउंड पर निकलता है, कि कहीं कोई बच्चा या शिक्षक कक्षा के बाहर तो नहीं है। इसे देखते ही बच्चे एवं शिक्षक कक्षा की तरफ भाग खड़े होते हैं, और यदि कोई बच्चा या शिक्षक हैडमास्टर की नजर में आ जाता है, तो उस बच्चे को वहीं दण्डित किया जाता है अथवा शिक्षक को भी वहीं फटकार सुननी पड़ती है। इससे स्कूल में एक ऐसा दहशत का माहौल बन जाता है, कि शिक्षक स्कूल को अपना नहीं बल्कि हैडमास्टर का मानने लगते है। ऐसी स्थिति में बच्चों को जैसे–तैसे पढ़ाना एवं महीने के अन्त में अपना वेतन पाना ही उनका परम उद्देश्य रह जाता है। शिक्षक स्कूल को अपना समझ कर स्कूल की भलाई और तरक्की के लिए कोई भी कोशिश नहीं करते है। स्कूलों में हैडमास्टर की नियुक्ति हमारी सामन्तवादी सोच का प्रतीक है

जिसमें किसी पर विश्वास नहीं करके एक व्यक्ति को विशेष अधिकार प्रदान कर शेष पर नियंत्रण बनाने का प्रयास किया जाता है। अगर हमारे देश ने लोकतांत्रिक मूल्यों को स्वीकार किया है तो फिर समानता और स्वतंत्रता के आधार पर व्यवस्था बनानी चाहिए। जिसमें सभी को अपनी बात कहने का पूरा अधिकार होना चाहिए। स्कूल पर एक हैडमास्टर के स्थान पर सभी शिक्षकों का समान रूप से अधिकार होना चाहिए। ताकि सभी शिक्षक स्कूल के बैहतर संचालन में अपना योगदान कर सके। इसके अभाव में परिणाम यह होता है कि जिस दिन हैडमास्टर स्कूल नहीं आता है, उस दिन स्कूल में एक अलग ही माहौल देखने को मिलता है। शिक्षक पूरी तरह से अपनी मर्जी के मालिक होते है, बच्चों को उस दिन पढ़ाना या ना पढ़ाना उनकी इच्छा पर निर्भर करता है, और ऐसा करते समय उन्हें जरा भी आत्मग्लानी नहीं होती है। इसका कारण है कि वे स्कूल को अपना नहीं बल्कि हैडमास्टर का मानते है। उनका मानना है कि स्कूल की तरक्की की पूरी जिम्मेदारी उनकी नहीं बल्कि हैडमास्टर की है, और वे उतना ही करेंगे जितना करने को उनसे कहा जाएगा। ऐसी स्थिति में हैडमास्टर एक हऊआ बन जाता है, जिससे डरते तो सब है, परन्तु जिसकी इज्जत कोई भी नहीं करता है।

इसी से हटकर हमारे "उदय सामुदायिक पाठशाला" में हैडमास्टर नामक व्यक्ति के लिए कोई भी स्थान नहीं है, कारण

"उदय सामुदायिक पाठशाला" हमारी अपनी पाठशाला है, और इसके लिए हम सभी एक टीम के रूप में काम करते है। हमारे स्कूल में यदि किसी शिक्षक को समस्या हो रही हो तो उसकी मदद करने के लिए दूसरे शिक्षक हमेशा तैयार रहते है। हमारे स्कूल में किसी भी तरह के नियम की आवश्यकता नहीं होती है, परन्तु यदि कभी इसकी जरूरत भी पड़ जाए तो नियम बनाने का अधिकार सिर्फ शिक्षक को ही नहीं बल्कि बच्चों को भी होता है। बच्चे और शिक्षक एक साथ मिलकर नियम बनाते है और उसे मानते है। परन्तु जिन विषयों में बच्चों की भागीदारी नहीं होती है, वहाँ नियम सभी शिक्षक आपस में मिलकर बनाते है। और उसे मन से स्वीकार करते है, क्योंकि ये नियम उन पर थोपा नहीं जाता है। शाला में बच्चों के साथ क्या और किस तरह काम करना है, किन तरह की आवश्यकताएँ हैं, इन सबकी जिम्मेदारी शिक्षक समूह आपसी विचार–विमर्श से लेता है। हमें नहीं लगता है कि एक व्यक्ति की निर्णय क्षमता सामुहिक निर्णय से बेहतर होती है। अतः हम कह सकते हैं कि, उदय में सामूहिक भागीदारी और सामूहिक जवाबदेही को आधार बनाकर समानता और स्वतंत्रता जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों का सफल प्रयोग किया जा रहा है।

gekj ;gk gMekLVj ugh gA